REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

भारतीय पर्यटन उद्योग के विकास की भावी संभावनायें व चुनौतियां

डॉ. अमिताप शर्मा
वणिज्य विभाग , शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिवनी, (म.प्र.)

शोध सारांश:-

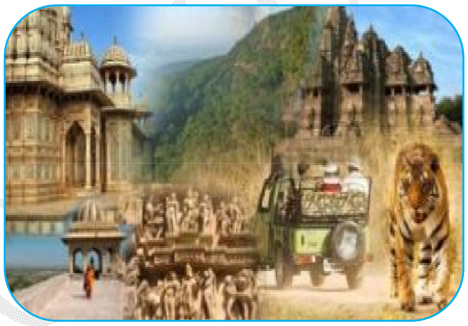

पर्यटन 21वीं शताब्दी सा सबसे बडा उद्योग है यह विकास को बढावा देने वाली गतिविधि है आज विश्व के अनेक देश ऐसे है जिनकी अर्थव्यवस्था सिर्फ पर्यटकों पर निर्भर करती है। जैसे सिंगापुर, स्विटजरलैन्ड, इंडोनेशिया, मारीशस, थाइलैड, नेपाल आदि। वर्तमान पर्यटन देश एवं राज्यों की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार बनता जा रहा है। लोगो का जीवन स्तर ऊँचा उठाने में पर्यटन उद्योग अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। पर्यटकों के लिए बाईबिल कही जाने वाली पत्रिका लोनली प्लेनेट के सर्वेक्षण में भारत को पर्यटन के मामले में पांचवा स्थान दिया है। भारत और चीन क्रमशः 9.7 और 8.5 प्रतिशत विकास सहित 2012 तक दूसरे ओर तीसरे विशालतम बाजार हो जायेगो। तुर्की पहले क्रम पर रहेगा।भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। इसका संबंध जहां एक ओर रोजगार सृजन से है। वही दूसरी ओर पर्यटकों के आवागमन से विदेशी मुद्रा की प्राप्ति से भी है। एक आंकलन के अनुसार केवल आगरा में ताजमहल देखने के लिए हर साल 3.5 लाख पर्यटक आते है जिनमें 40 प्रतिशत विदेशी होते है। देश में आने वाले पर्यटकों की संख्या 40 लाख से भी ऊपर आंकी गई है। ओर विदेशी पर्यटकों की संख्या में लगभग 5 लाख की वृद्धि हो रही है। पर्यटन आमदनी और रोजगार दोनो दृष्टि से विश्व का सबसे बडा उद्योग है विश्व पर्यटन कारोबार में भारत का हिस्सा केवल 0.4 प्रतिशत है। भारतीयों की बढती समृद्धि और जीवनशैली में बदलाव से सैर–सपाटे का शौक बढता जा रहा है जिससे कि घरेलू पर्यटन में भी वृद्धि हो रही है।

अगर सही मायने में देखा जाये तो पर्यटन कई विशिष्ट व्यवसायो का समूह जो कि प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से इससे जुडे हुए है। वर्तमान समय में पर्यटन के विभिन्न आयाम जिनमें की–ग्रामीण पर्यटन, साहसिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, ऐतिहासिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, पर्यावरणीय पर्यटन एवं क्रूज पर्यटन शामिल है कि तेजी से विकास हो रहा है परन्तु इनमें अभी भी और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे की प्रत्येक आयाम महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सके। भारत में पर्यटन स्थलों पर मंहगाई अधिक है तथा वहा के स्थानीय व्यक्ति पर्यटकों से अधिकतम लाभ कमाना चाहते है। देश के अनेक प्रमुख पर्यटक स्थल वायु मार्ग तथा रेल मार्ग से जुडे नही है।भारत में मुख्य रूप से विदेशी पर्यटकों को भी ध्यान में रखकर योजनायें बनाई जाती रही है। भारतीय पर्यटकों की ओर विशेष ध्यान नही दिया जाता और लगभग सभी पर्यटन स्थल पर अनेक प्रकार की कठिनाईयां जिनमें आवास, यातायात, सुरक्षा, आादि प्रमुख है यहां स्पष्ट पर्यटन नीति के अभाव में निजी टूर आपरेटर और टेक्सी चालक, टूर ऐजेन्ट कई प्रकार से पर्यटकों को शोषण करते है।भारत

में पर्यटन उद्योग में विदेशी पूंजी निवेश इस कारण नही हो रहा है। क्योकि दूसरे पर्यटन देशों की तरह यहां सिंगल विन्डो सिस्टम की व्यवस्था नही है। सिर्फ एक होटल बनाने के प्रस्ताव पर एक दर्जन से ज्यादा मंत्रालय ओर विभागों की स्वीकृति लेने में वर्षो का समय लग जाता है। चीन और मलेशिया जैसे देश में मात्र 30 दिन में ऐसे लाइसेंस दिये जाने की व्यवस्था है। भारत में विभिन्न राज्य सरकारों में अपने राज्यों में अंधाधुन्ध टेक्स थोपने को अपना मकसद तो बनाया है परन्तु पर्यटन स्थलों, सेवाओं और सुविधाओं को बेहतर बनाने की ओर कोई ध्यान नही दिया गया है और न ही पर्यटकों की समस्याओं व सुरक्षा को ध्यान में रखा है।

पर्यटन उद्योग को बढाने के लिए इसमे स्थानीय लोगो का सहयोग भी लेना आवश्यक होगा। इसके अतिरिक्त इसका मुख्य उददेश्य आपसी समझ एवं पारस्परिक मित्रता का माध्यम बनाना होगा न कि मुद्रा द्वारा खरीदा जाने वाला कोई भी सुख का स्त्रोत।संस्थागत स्तर पर सरकारी एवं निजी क्षेत्रों द्वारा सामुदायिक कल्याणोन्मुख रूपरेखा तैयार करनी होगी। पर्यटन व्यवसाय एवं उद्योग को नियमित करने, पर्यटकों की सुरक्षा एवं संरक्षा का मूल अवसंरचना एवं स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं को सुनिश्चित करने के लिए सरकार को एक विधायी रूपरेखा प्रदान करना होगा। नागर विमानन, पर्यावरण, वन, रेलवे, गृह, आदि विभागों के साथ प्रभावी तथा घनिष्ठ सबंध स्थाापित करने होगें। ग्रामीण पर्यटन और लघु पर्यटन पर विशेष बल देना होगा। जहा हमारी सांस्कृति एवं प्राकृतिक संपदा बडी मात्रा में उपलब्ध है।

मुख्य शब्दः—पर्यटन उद्योग, भारतीय अर्थव्यवस्था संभावनायें व चुनौतियां ।

प्रस्तावना:-

पर्यटन की अवधारणा में यात्रा, भ्रमण, आवास, प्रवास तथा संस्कृति का अभिन्न हिस्सा रहा है। यहां अतिथि भगवान होता है तथा वासुधैव कुटुम्बम पूरा विश्व एक परिवार है कि सांस्कृतिक परम्परायें विकसित हुई है पर्यटन विकास को बढावा देने वाली गतिविधि है। यह मानव संसाधन विकास का भी एक महत्वपूर्ण पहलू है। पर्यटन 21वीं शताब्दी का सबसे बडा उद्योग है।

पर्यटन दर्शन मूल रूप से स्थानीय राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, धार्मिक प्रचार—प्रसार पर आधारित है। पर्यटन आनन्द की प्राप्ति सुख अनुभूति की क्रिया कलाप पर एवं बहुसंख्यक समूह के भ्रमण पर जो एक स्थान से दूसरे स्थान का भ्रमण करते है कि क्रिया कलाप पर आधारित है। पर्यटन एक प्राचीन अवधारणा है प्राचीन समय में सुमेरियन एवं हडप्पा कालीन सम्यता में मानव का घुमक्कडी जीवन इसके प्रमाण है।

भारतीय संस्कृति में पर्यटन की अवधारणा विरासत के रूप में प्राप्त है। यहां ऋषि मुनि, साधु—संत एक स्थान से दूसरे स्थान में भ्रमण एवं पर्यटन करते रहे है। उनका कोई निश्चित स्थान एवं आवास नही था आादि शंकराचार्य ने पर्यटन एवं भ्रमण संस्कृति को बढावा देने के लिये धार्मिक केन्द्र के रूप में चार मठों की स्थापना की थी जो कि चारो दिशाओं में स्थित है।

पर्यटन की प्रवृत्ति केवल मानव जाति में ही नही अपितु पशु—पक्षी, जीव—जन्तु वनस्पतियों में भी पायी जाती है। आज भी शीत कालीन समय में साइबेरियन पक्षी मध्य ऐशिया को पार करते हुए भारत में विचरण करने आते है और मौसम परिवर्तन के साथ पुनः वापस चले जाते है । बहुत से जीव जन्तु एक स्थान से विचरण करते हुए दूसरे स्थान की ओर चले जाते है। इससे स्पष्ट है कि पर्यटन एवं भ्रमण की परम्परा संपूर्ण जैव जगत में व्याप्त है।

भारत को पहले सिर्फ प्राचीन संस्कृति का धरोहर वाला देश समझा जाता था परन्तु अब ऐसे पर्यटन स्थलों के प्रति उसकी रूचि अधिक बढ रही है, जहां वे अपना समय प्राकृतिक सौंदर्य एवं सांस्कृतिक नवीनता के बीच बिता सके हमारे देश में विभिन्न पर्यावरणीय विविधतायें मौजूद है। हिमालय से लेकर सुदूर दक्षिण मे केरल तथा उत्तर पूर्व में अरूणांचल प्रदेश तक सभी स्थल पर्यावरण की दृष्टि से अनेक विभिन्नतायें समेटे हुए है।

पर्यटन संबंधी नीतियॉः—

भारत में पर्यटन के विकास की दिशा में शुरूआत 1948 में हुई जिसके अंतर्गत भारत सरकार ने पर्यटन उद्योग को विकसित करने के लिए 1949 में पर्यटक आवागमन कमेटी की स्थापना की जिसके दो क्षेत्रीय

कार्यालय नई दिल्ली व बम्बई में स्थापित किए। 1950, 1952, 1955, 1958 में पर्यटन से संबंधित विभिन्न समितियों एवं कमेटियों का गठन किया गया। मार्च 1963 मे पर्यटन उद्योग को प्रोत्साहित करने के लिए श्री लक्ष्मीकान्त झा की अध्यक्षता में गठित समिति ने 15 सूत्रीय योजना का सुझाव दिया जिसमें होटलों में ठहरने की दरों के सम्बन्ध में तथा सुविधाओं एएवं अन्य उपायों के सन्दर्भ मे सुझाव दिए गए। 1965 में झा समिति के सुझाव के आधार पर परिवहन मंत्रालय एवं पर्यटन विभाग का पुनर्गठन करके नया नाम परिवहन एवं पर्यटन विभाग किया गया । 18 सितम्बर, 1966 को पर्यटन विभाग का नागरिक उडडयन विभाग से जोड दिया गया और 1966 में भारतीय पर्यटन विकास निगम की स्थापना हुई। यह संस्था होटलों एवं यात्री आवासों की श्रृखला नियंत्रित करती एवं चलाती है। इसमें पर्यटकों के लिए परिवहन सुविधाओं की व्यवस्था की जाती है। पर्यटन उद्योग को बढावा देने के लिए वर्ष 1982 के दौरान सरकार द्वारा एक विस्तृत पर्यटन नीति घोषित किया गया। 1991 में पर्यटन को विदेशी निवेश के लिए प्राथमिकता का क्षेत्र घोषित किया गया । मई 1992 में पर्यटन के लिए एक राष्टीय कार्य योजना तैयार की गई और इसमें पर्यटकों के आगमन में आसाधारण वृद्वि, पर्यटन के माध्यम से विदेशी मुद्रा अर्जन और रोजगार देने वाली नीतियों को शाामिल किया गया।

नई राष्ट्रीय पर्यटन नीति मई 2002 में घोषित की गई थी। इसका उददेश्य आर्थिक विकास की गति को तेजी प्रदान करने में पर्यटन को प्रमुखता देना और रोजगार उत्पन्न करना तथा आर्थिक विकास के क्षेत्र में इसके गुणात्मक प्रभावों का उपयोग करना है। नीति में सुनिश्चित किया गया है कि भारत आने वाले पर्यटक अपने आपको शारीरिक रूप से स्फूर्ति, मानसिक रूप से तरूण, सांस्कृतिक रूप से समृद्व, आध्यात्मिक रूप से लाभान्वित महसूस करें और अन्तर्मन में भारत को महसूस करें।

पंचवर्षीय योजनाओं के अन्तर्गत विकासः–

स्वतंत्रता के कुछ तक पर्यटन के विकास की ओर समुचित ध्यान नही दिया गया । इसके लिए पहली बार दूसरी पंचवर्षीय योजना में धन की व्यवस्था की गई। बाद में यह राशि बढती गई 1982 में पर्यटन प्रोत्साहन नीति की घोषणा की गई। सातवी पंचवर्षीय योजना में पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया । 1989 में पर्यटन परियोजनाओं के लिए धन उपलब्ध कराने का उददेश्य से पर्यटन वित्त निगम की स्थापना हुई। आठवीं पंचवर्षीय योजना में निजी क्षेत्र के सहयोग से पर्यटन विकास को विशेष महत्व दिया गया । इस योजना अवधि के दौरान कुछ नई परियोजनाएं और कार्यक्रम भी चलाए गए थे, जैसे–तीर्थ थान के विकास के लिए योजना विशेष पर्यटन क्षेत्रों के विकास के लिए वित्तीय सहायता, परिपथों और स्थानों, मेलों और उत्सवों का संबंर्धन और स्वदेशी प्रचार आदि।

दसवी पंचवर्षीय योजना में इस क्षेत्र को दी जाने वाली राशि 2900 करोड रूपए कर दी गई है। इस पंचवर्षीय योजना में निम्नलिखित प्रयास किए जा रहे है– पर्यटन को आर्थिक विकास के एक तंत्र के रूप में प्रतिष्ठित करना, रोजगार सृजन, आार्थिक विकास तथा ग्राम्य पर्यटन को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए पर्यटन प्रत्यक्ष तथा बहुआयामी प्रभाव का दोहन, पर्यटन विकास के प्रमुख संचालक के रूप में घरेलू पर्यटन पर ध्यान देना, विस्त्र के समृद्ध होते व्यवसाय तथा भारत की असीम पर्यटन सम्भावना का लाभ उठाने के लिए भारत को विश्व मार्का के रूप में प्रतिष्ठित करना, सरकार के साथ मिलकर निजी क्षेत्र के कार्य करने के लिए उत्प्रेरक की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल, भारत की निराली सभ्यता, हेरिटेज तथा संस्कृति पर आधारित एकीकृत पर्यटन परिपथ का राज्यों, निजी क्षेत्र तथा अन्य एजेंसियों के साथ मिलकर सृजन तथा विकास तथा यह सुनिश्चित करना कि भारत आने वाले पर्यटक भौतिक रूप से शक्ति वर्धक, मानसिक रूप से कायाकल्प, सांस्कृतिक तथा आध्यात्कि रूप से उद्धत हों तथा वे अपने आपको भारतमय महसूस करें।

भारत में पर्यटन का महत्वः–

भारतीय अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग का महत्व इस संदर्भ में विशेष रूप से है कि इससे न केवल आार्थिक विकास को बल्कि मानसिक तथा पर्यावरण के विकास को भी बल मिलता है। जिसमें देश में स्वच्छ वातावरण का निर्माण होता है। चूकि देश को जहां इस उद्योग से बडी मात्रा में विदेशी मुद्रा की प्राप्ति हो रही है वही दूसरी ओर पर्यटन उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में रोजगार की सम्भावनाओं का सृजन कर रहा है।

पर्यटन को अगर सही मायने में देखा जाए तो कई विशिष्ट व्यवसायों का समूह है इसमें होटल व्यवसाय, एयरलाइंस, टूर–आपरेटर, मनोरंजन, उद्योग, लोक कलाओं से जुडी विविध विधाओं जैसे कठपुतली, नट, जादूगरी पर्यटन आधारित साहित्य रचयिता, वृत्त–चित्र निर्माण, हस्तशिल्पकर्मी, ट्रैवल एजेंसी ऑपरेटर आदि शामिल है देश में व्याप्त बेरोजगारी को दूर करने के लिए पर्यटन का चहुंमुखी विकास रोजगार के अवसरों का सृजन कर सकता है। पर्यटन उद्योग इस समय एक करोड दस लाख लोगो को परोक्ष रूप से रोजगार दे रहा है। सकल घरेलू उत्पाद में इसका हिस्सा 5.9 प्रतिशत है। विश्व स्तर पर पर्यटन का योगदान 10.6 प्रतिशत है। अगर हम 2015 तक पर्यटन उद्योग की हिस्सेदारी विश्व स्तर के बराबर बढ सकें तो ढाई करोड और लोगों को रोजगार दिया जा सकेगा।

विश्व देशाटन और पर्यटन परिषद की तीसरी बैठक के अनुमान के अनुसार देश में पर्यटन उद्योग ने सकल घरेलू (जी डी पी) में दो प्रतिशत का योगदान दिया है और आने वाले समय में भारत के एक करोड 10 लाख लोगो को इससे रोजगार मिलेगा। इसके अनुसार विश्व में पर्यटन उद्योग में दो करोड 38 लाख लोगों को रोजगार मिलेगा। भारतीय पर्यटन उद्योग को सबसे ज्यादा बढावा विदेशी मीडिया में जोर–शोर से शुरू किए गए बेमिशाल भारत अभियान से मिला।

अन्य देशों की तुलना में भारत में कुछ रोजगार में यात्रा एवं पर्यटन का हिस्सा मात्र 2.9 प्रतिशत है, जो बहुत कम है। यात्रा एवं पर्यटन के माध्यम से नई नौकरियों की व्यापक संख्या सृजित करने की व्यापक सम्भावना है। पर्यटन उद्योग का देश की सामाजिक–आर्थिक प्रगति के साथ बडा शक्तिशाली सम्बन्ध है। इसका उच्च राजस्व पूंजी अनुपात है। अनुमान है कि 10 लाख रूपए के निवेश से 47 प्रत्यक्ष नौकरियां सृजित होती है, जो कृषि तथा उद्योग क्षेत्र से रोजगार सम्भावना से कही अधिक है। ग्रामीण दस्तकारो, गलीचे बुनने वाले उपहार का समान बेचने वाले और ट्रेवल एजेंसियों में कार्यरत लोगों की संख्या इससे अलग है। प्रत्यक्ष व प्रत्यक्ष रूप से पर्यटन उद्योग में 2 करोड लोग लगे है। इस उद्योग की एक अन्य विशेषता यह है कि होटलों, विमान सेवाओं, ट्रेवल एजेंसियों, दस्तकारी आदि में महिलाओं की संख्या पुरूषों से अधिक है। वर्ल्ड ट्रेवल एंड टूरिज्म ने अपने नवीनतम शोध अध्ययन मे बताया है कि वर्ष 2015 तक भारत में पर्यटन उद्योग में करीब एक करोड नौकरियां सृजित होगी।

भारत में पर्यटन की संभावनायें:–

भारत में पर्यटन के विभिन्न आयामों को विकसित करके यहां इनकी सभावनाओं को और अधिक बढाया जा सकता है। आज पर्यटन के विभिन्न आयामों पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है जो कि निम्न है–

ग्रामीण पर्यटनः–

ग्रामीण पर्यटन के संबंध में सम्भावना ग्रामीण पर्यटन की अवधारणा काफी हद तक नई है लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। शहरों में चौबीसों घण्टें व्यस्त रहने वाले लोग काम के तनाव से मुक्त होने और नई ऊर्जा हासिल करने के लिए शहरों से दूर गांवों मे शुद्ध वातावरण में कुछ समय बिताना चाहते हे। देश के विभिन्न राज्य अपने अंचलों में विरासत में मिली परम्पराओं, रीतिरिवाजों और अनूठी कला व संस्कृति को समेटे हुए है। इन्हे सुरक्षित व संरक्षित रखना जरूरी होने के साथ ही साथ इस बारे में दुनिया के पर्यटन बाजार को भी इनके महत्व को बताने की आवश्यकता है।

दसवीं पंचवर्षीय योजना मे भी ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए ध्यान दिया गया है। इस योजना के तहत निम्नलिखित कार्यकलापों सहित गांवो मे पर्यटन हेतु अधिकाधिक 50 लाख रूपए की राशि का प्रावधान किया गया है। गांवों के चारो ओर का सुधार–जैसे–बगीचों, बाढ, अहाते की दीवार आदि का विकास, पंचायत की सीमाओं के अन्तर्गत सडके का सुधार, गांव में प्रकाश की व्यवस्था, ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन ओर मल व्ययन प्रबन्धन (केवल पूंजी लागत) में सुधार मार्गस्थ सुविधाओं का निर्माण, स्मारकों का सौन्दर्यीकरण प्रतीक चिन्ह, पर्यटक आवास आदि। इस प्रकार ग्रामीण पर्यटन देश के पर्यटन उद्योग को एक नया आयाम देगा।

साहसिक पर्यटनः–

साहसिक पर्यटन विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने का एक बेहतरीन जरिया बन सकता है, परन्तु देश में साहसिक पर्यटन को बढावा नही मिल पा रहा है। साहसिक पर्यटन में पर्वतारोहण, ट्रैकिंग, स्कैटिंग, रॉक, क्लाइंबिंग, पैरा ग्लाइडिंग, वन्य जीवन जन्तुओं वाले अभ्यारणों तथा जगंलो की सैर आदि भी है। इसके लिए उत्तांचल, हिमाचल, पूर्वोत्तर के राज्यों में पर्याप्त सम्भावनाएं मौजूद है। साहसिक पर्यटन, पर्यटन व्यवसाय को एक नया आयाम किए जाने की आवश्यकता है। देश में कुछ साहसिक पर्यटन स्थान निम्नलिखित है– मनाली (पर्वतारोहण, ट्रेकिंग, स्कीइंग), कांगडा (पैराग्लाइडिंग), ऋषिकेश(नौकायान), गढवाल, मनाली, गुलमर्ग, पहलगॉव(स्कीइगं), कुमाऊॅ, गढवाल, लददाख(ट्रेकिंग)।

ऐतिहासिक पर्यटनः–

ऐतिहासिक पर्यटन की उन्नति की भी खूब सम्भावनाएं है। देश में ऐतिहासिक स्थलों की कमी नही है, परन्तु उनके उचित रखरखाव में चूक हो रही है। केन्द्रीय सरकार ने इस बात को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों के रख–रखाव के लिए यूनेस्को की सिफारिश के आधार पर जापान बैक ऑफ इण्टरनेशनल कोआपरेशन से आर्थिक मदद लेने का निर्णय किया । इसके अंतर्गत महाराष्ट्र अजंता, एलोरा, पितलखेरा गुफाओं का संरक्षरण और विकास के लिए जापान सरकार मदद देगी। जबकि म0प्र0 में सांची, सतधारा स्थित बौद्ध स्मारकों के संरक्षण के लिए जापान सरकार से पहले से ही सहायता प्राप्त हो रही है।

चिकित्सा पर्यटनः–

महामहिम राष्ट्रपति डॉ0 अब्दुल कलॉम चिकित्सा पर्यटन को बढावा देने के पक्ष मे है उनका मानना हे कि भारत की आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति, योग ओर विज्ञान का तालमेल लोगो के जीवन में आनंद भर सकता हे। आज से कुछ वर्ष पहले तक लोग स्वास्थ्य पर्यटन के क्षेत्र से अपरिचित थे परन्तु आज यह चर्चा में हे। चिकित्सा पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है जो स्वतः विकसित हो रहा है। इलाज सस्ता होने के कारण पडोसी देशो सहित अमेरिका, ब्रिटेन से भी लोग इलाज कराने भारत आ रहे है अर्थात सैर के साथ–साथ इलाज भी। बडे निजी अस्पतालों में 10 से 25 प्रतिशत तक विदेशी मरीज आ रह हे।

भारतीय उद्योग परिसंघ (सी0 आई0 आई0) द्वारा जारी आंकडों के अनुसार अमेरिका में दिल के आपरेशन पर 30हजार डालर खर्च आता है जबकि वही ऑपरेशन भारत मे केवल 6 हजार डॉलर में ही किया जा सकता है। इसी प्रकार अमेरिका में वोनमेरो ट्रांसप्लांट की कीमत ढाई लाख डॉलर है भारत में यह केवल 26 हजार डॉलर में हो सकता हे। चिकित्सकीय खर्च (डॉलर) की तुलना में एनजियोग्रॉफी अमेरिका में 25 हजार (भारत में साढे आठ हजार), बायपास सर्जरी 30 हजार डॉलर (भारत में 85000), घुटना प्रत्यारोपण में 25000 (भारत में 60000) खर्च आता हे। चिकित्सा के लिये यूरोपीय देशो से आने वाले पर्यटकों की संख्या तेजी से बढ रही है और सम्भावना है कि आगामी कुछ वर्षो में स्वास्थ्य पर्यटन के जरिये देश को करोडो डॉलर कि वाार्षिक आय होने लगेगी।

चिकित्सा पर्यटन में ही आयुर्वेद की पंचकर्म की क्रियाएं भी शामिल हो चुकी है पंचकर्म, तनाव मुक्ति, मोटापा घटाना और काया कल्प, चिकित्सा आदि कुछ ऐसे लोकप्रिय पैकेज है जिन्हे पर्यटको ने बहुत पसन्द किया है। केरल ने सबसे पहले पंचकर्म को चिकित्सा पर्यटन से जोडकर प्रचारित किया जो सफल रहा हे। पर्यटन के अग्रणी संगठन वर्ल्ड ट्रेवल एण्ड टूरिज्म कौंसिल की रिपोर्ट के अनुसार आने वाले वर्षो में केरल में पर्यटन 11 प्रतिशत की तेजी से बढेगगा। वर्ष 2003 के दौरान भारत में लगभग 150000 विदेशी पर्यटक अपना इलाज कराने आये थे जर्मनी में पर्यटन सलाह में अंतिम शब्द माने जाने वाली पत्रिका ज्यों से सान ने केरल को आयुर्वेद का मक्का बताया है टाइम्स मेग्जीन ने तो यहां तक लिखा है कि केरल की यात्रा यानी पैसा वसूल।

सांस्कृतिक पर्यटनः–

पर्यटन के मामले में केरल नये–नये प्रयोग करने की दृष्टि से अन्य राज्यों से काफी आगे है केरल ने मुख्य रूप से आयुर्वेद और अन्य भारतीय चिकित्सा पद्धतियों की मदद से अपने यहां स्वास्थ्य पर्यटन का सफल प्रयोग किया है। अब यहां सांस्कृतिक पर्यटन को सफल प्रयोग हो रहा हें। केरल में थ्रिसूर स्थित कांमडलम

अभी भी प्राचीन गुरूकुल पद्धति के माध्यम से कला और संस्कृति संबंधी शिक्षा दी जाती है। विदेशी पर्यटक कुछ समय यहां गुजारकर एक ऐसा अदभुत अनुभव प्राप्त करते है जिसके बारे में उन्होने अभी तक पढा था या सुना ही था, केरल में कई स्थानों पर विदेशी पर्यटको को वहां के स्थानीय व्यंजन बबनाना भी सिखाया जा रहा है कुछ स्थानों पर तो उन्हे पेडो पर चढकर नाारियल तोडने की कला भी सिखाई जाती है। इस सबसे विदेशी पर्यटक अच्छा खासा रोमांचित अनुभव कर रहे है। आशा है कि जल्द ही अन्य राज्य भी केरल के इस सांस्कृतिक पर्यटन के नक्शे कदम पर चलने लगेगे।

पर्यावरणीय पर्यटनः—

ईको टूरिज्म लिहाज से सिक्कम सबसे अच्छीजगह है। सिक्किम अपनी संस्कृति और प्राकृतिक विविधता के कारण बहुत तेजी से प्रसिद्धि पा रहा है यहां आने वाले भारतीय पर्यटकों की संख्या प्रति वर्ष 2 लाख और विदेशी पर्यटको की संख्या 12 हजार है। भारतीय उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली तितलियों की किस्मो मे से 50 प्रतिशत सिक्किम में पाई जाती है। यहां आर्किड की 454 किस्में मौजूद है राज्य सरकार ने एक अलग प्रकार के पर्यटन की योजना बनाई है। जिसमें आर्किड पयटन और तितली पार्क भ्रमण भी शामिल है देश के दूसरे राज्य भी सिक्किम की इस पहल को अपना सकते है।

कूज पर्यटनः—

भारत के विशाल समुद्री तटों और उसके आस—पास प्राकृतिक सौदर्य से भरपूर स्थलो की ओर देशी विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए कूज पर्यटन को विकसित किया जायेगा इसके अंतर्गत सुविधाओं से युक्त छोटे जहाजों के बेडे तैयार किये जाने की योजना है। ये बडे पर्यटको को भारत के नैसर्गिक सौन्दर्य का दर्शन करायेगे इसके लिए 5 बंदरगाहों की पहचान की गई है ये है— कोचीन पोर्ट, न्यूमंगलोर पोर्ट, गोवा का मोरमूगांव बंदरगाह मुबई पोट और तूतीकोरीन पोर्ट इन स्थलों पर देशी विदेशी पर्यटकों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए बंदरगाहों के नजदीक अच्छे रेस्ट हाउस बनाये जायेगे इसके बाद दूसरे फेज में चेन्नै, हल्दिया, नागगपटटनम, और पोर्ट ब्लेयर बंदरगाहो को भी विकसित किया जायेगगा इन कूज सर्किटो का चयन घरेलू पर्यटकों की आस्थाओं और विदेशी सैलानियों की जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जायेगा।

धाार्मिक पर्यटनः—

हमारे देश में धार्मिक पर्यटन अपनी अहम भूमिका अदा कर रहा है। देश में सबसे अधिक धार्मिक पर्यटन से रोजगार पैदा हो रहे है। देशी पर्यटक तो अपनी धार्मिक भावनाओं के चलते धार्मिक स्थलों का भ्रमण करते है परन्तु विदेशी पर्यटको इन स्थलों पर शांती की तलाश में आ रहे है। अतः विदेशी पर्यटको को इस ओर आकर्षित करने के लिए और अधिक सुविधायें बढाने की आवश्यकता है।

पर्यटन उद्योग के विकास के मार्ग में अनेक कठिनाइयां है यही कठिनाइयां हमारे लिए वर्तमान समय में चुनौतियां बनी हुई है जो निम्न हैः—

1. **होटल का आवास**—विगत वर्ष अनेक बडे टूर ऑपरेटरों को भारत का पर्यटन का कार्यक्रम इसलिए बंद करना पडा क्योंकि यहा ठहरने के लिए होटलों की कमी है। उदारीकरण एवं मुक्त व्यापार की नीति के कारण दो—तीन वर्षो से व्यापारिक कार्यो से आने वाले व्यापारिक पर्यटकों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। परिणामस्वरूप परम्परागत पर्यटकों द्वारा पहले से आरक्षण कराने के बावजूद भी उन्हें ठहरने का उचित स्थान नही मिल पाता होटल मालिक होटलो की कमी के कारण व्यापारिक पर्यटको से अधिक धन राशि वसूलने लगते है। फलस्वरूप टूर ऑपरेटरो को अग्रिम रूप से किराया बताने में आना कानी करनने लगते है जिससे पर्यटन अभिकरणों को अग्रिम बुकिंग करने में कठिनाई होती है। कई बार पूर्व बताई गई दरों में परिवर्तन में विषम परिस्थिति उत्पन्न कर देता है इइन सभी बातों से विदेशी पर्यटकों के मन में भारत के प्रति एक गलत धारणा बनती है।
2. **यातायात**— पर्यटन उद्योग की दूसरी महत्वपूर्ण यातायात की है भाारत में पर्यटन की दष्टि से वायु रेल तथा सडक यातायात किसी की भी सुविधा उपयुक्त नही है। प्रमुख पर्यटन स्थल वायु मार्ग से जुडा न होना,

सीमित उडानों तथा निर्धारित समय से देरी से उडान होना पर्यटकों के लिये कठिनाई पैदा करता है। रेलो में आत्याधिक भीड भाड, आरक्षणों में असुविधा, विलम्ब से चलना, आरामदायक सफर का अभाव तथा सुरक्षा की कमी पर्यटकों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है इसी प्रकार खराब एवं टूट–फुटी कच्ची–पक्की सडके भी पर्यटन को प्रभवित करती है।

3. **रूचिकर भोजन की अनुपलब्धता–** होटल में रूचिकर एवं स्वास्थ्यवर्धक स्वच्क्ष भोजन नही मिल पाता सामान्यतः ठण्डा या बासी भोजन गरम करके पर्यटकों को खिला दिया जाता हे।जो पर्यटको में भारत के प्रति अरूचि पैदा करता है।
4. **स्वच्छ पेय जल की कमी–**होटलों तथा पर्यटन स्थलों पर स्वच्छ पेय जल की भी समस्या है अधिकांश पर्यटन पर तो नदी सरोबर, या झरनों का मटमेला, रोगों को आमत्रंण देता हुआ पानी को पीने के लिए पर्यटक बाध्य हो जाते है जिससे उनका स्वास्थ्य खराब हो जाता है।
5. **मंहगाई–** भारत में पर्यटक स्थल पर मंहगाई अधिक है। तथा वहां के स्थानीय व्याक्ति पर्यटाको से अधिकतम धन कमाना चाहते है देश के अनेक प्रमुख पर्यटक स्थल वायु मार्ग तथा रे ल मार्ग से जुडे हुए नही है, भिखारियों द्वारा भी पर्यटकों को तंग किया जाता है। यह स्थिति धार्मिक पर्यटन स्थलों पर अधिक होती है वहां पर रूढीवादी व्यक्तियों का भरी जमावडा रहता है जो कि विदेशी पर्यटाकों की भावनाओं को शोषण करते है इन प्रमुख बुनियादी कठिनाइयों के अतिरिक्त पर्यटन स्थलों पर व्याप्त गंदगी व दूषित वातावरण, होटलों में आवश्यक सुविधाओं का अभाव, उपयुक्त टेलेक्स व्यवस्था का न होना, विद्युत की अनियमितता योग्य एवं अनुभवी गाईडों का अभाव, ट्रेवल एजेन्टो अथवा गाईडों द्वारा पर्यटाको को ठगने की प्रवृत्ति विदेशी मुद्रा परिवर्तन में कठिनाई आदि अनेक समस्याये जो भारतीय पर्यटन उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।
6. **अन्य–**

(अ)–पर्यटन स्थलों पर प्रशिक्षित, ईमानदार, तथा अनुभवी गाईडों की कमी है।

(ब)–पर्यटकों को समुचित जानकारी देने वाले सूचना केन्द्रो की कमी है, जो वर्तमान में सूचना केन्द्र है उनका कार्य संतोषप्रद नही है।

(स)–देश का प्रमुख पर्यटन स्थल भारत का स्वर्ग कहलाने वाला काश्मीर राज्य आंतक का पर्याय बन गया है। आतंकबाद के चलते पर्यटक यहां आने से कतराने लगे है। बम विस्फोट, गोलाबारी जैसी आतंकवादी गतिविधियों से देश के बहुत से पर्यटन स्थल प्रभाावित हो रहे है।

निष्कर्षः–

विगत तीन दसकों से पर्यटन उद्योग का महत्व तीव्र गति से बढा है। हमारी सरकार ने पर्यटकों के विकास पर पूर्ण ध्यान दिया है और काफी अंशो में सफलता मिली है अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हम उद्योग के महत्व को समझे तथा इसके विकास के लिये निरनतर तत्पर एवं प्रयत्नशील रहे है आवश्यकता पर्यटन के संबंध में सही दिशा निर्देशन एवं नीति निर्माण की है क्योकि विश्व पर्यटन उद्योग ही ऐसा मात्र उद्योग है जो संपूर्ण विश्व को एक परिवार आपसी भाईचारे की भावना बढाने में सहयोग कर सकता है।अभी लक्ष्य काफी दूर है क्योकि अन्य देशों की तुलना में हम पर्यटकों की मेजवानी करने में काफी पीछे है फिलहाल हमें काफी मेहनत करने की आवश्यकता है साथ ही सरकारी प्रयासों के साथ–साथ स्थानीय लोगो का सहयोग सुनिश्चित करना होगा।यदि सरकार उपर्युक्त बिंदुओं पर अमल करें तो भारत मे पर्यटन उद्योग के विकास की प्रबल सम्भावनाये है। भारतीय अर्थव्यवस्था को निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होगा। इस उद्योग के विकास से विदेशी मुद्रा का तो अर्जन होगी ही साथ ही साथ सहयोगी उद्योग धंधों के विकास से बेरोजगारी की समस्या का समाधान भी हो सकता है।

सुझावः–

(1)–पर्यटकों को दिल्ली एवं मुंम्बई के अतिरिक्त अन्य नये प्रवेश द्वार विकसित किये जायें क्योकि उक्त शहरों में व्यापारिक पर्यटकों की बहुलता से परम्परागत पर्यटकों को ठहरने की सुविधा नही मिल पाती है।

(2)–होटलो की कमी की पूर्ति के लिये पेइगं गेस्ट योजना को अधिक आकर्षक बनाना चाहिए।

(3)–पैलेस ऑन हील्स की तरह अनेक रेल चलाई जानी चाहिए।
(4)–टूर ऑपरेटरो व गाइडों द्वारा पर्यटकों को ठगने की प्रवृत्ति को समाप्त करने के ठोस उपाये किये जाये।
(5)–पर्यटन स्थल के समीपवर्ती लोगों की सहभागिता सुनिश्चित की जानी चाहिए।
(6)–पर्यटन स्थल पर शासकीय दुकानें संचाालित की जायें जिससे पर्यटक खरीददारी कर सके।
(7)–पर्यटन स्थलों के विस्तार एवं विकास के लिये ठोस कार्यक्रम बनाये जाये।
(8)–पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए प्रांतीय सरकारें अपने बजट में पर्यटन मद पर भी अधिक राशि का प्रावधान करने की भी व्यवस्था करें। अनेक राज्य आज भी पर्यटन पर कुल बजट राशि का 10 प्रतिशत से भी कम व्यय करते है।
(9)–आंतकबाद पर अंकुश लगाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कारगर प्रयास करने चाहिए जिसमें कानून की शक्ति से लेकर जागरूकता नागरिको की सहायता भी ली जा सकती है।
(10)–गांवो में जीवित भारतीय संस्कृति की महान परम्पराओं महोत्सवों और मेलो आदि का प्रचार–प्रसार पर्यटन को दृष्टिगत रखते हुए पुरजोर तरीके से किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

1. इक्कीसवी सदीका भारत– डॉ0 अब्दुल कलॉम एवं वाई सुदंर राजन ।
2. संपूर्ण भारत के सांस्कृतिक पर्यटन स्थल–जगमोहन नेगी ।
3. भारत की अर्थनीति नये आयाम–चक्रवर्ती रंग राजन।
4. सांस्कृतिक पर्यावरण और पर्यटन–डॉ0 हरिमोहन नेगी।
5. पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत– जगमोहन नेगी।
6. मध्य प्रदेश में पर्यटन–डॉ0 सुभाष सिंह, डॉ0 बी0पी0 सिंह।
7. भारत का विकास दशा एवं दिशा–डॉ0 सुभाष गंगवाल।
8. भारतीय अर्थ व्यवस्था– एम0 सुन्दरम।
9. पर्यटकों की व्यवहार प्रणाली।
   "दार्जलिंग की स्थिति का अध्ययन"– स्वप्न कुमार बंदोपाध्याय।
10. "भारत में पर्यटन एवं होटल उद्योग प्रबंध" एक स्थिति अध्ययन –एम0एम0 आनंद।
11. विश्व के साहसिक पर्यटन और खेल–जगमोहन नेगी।
12. भारतीय पर्यटन का स्वरूप,सरदार पटेल स्मारिका व्याख्यान माला नई दिल्ली–एस0एन0चिव।
13. भारत में सांस्कृतिक पर्यटन अभिप्राय एवं विकास–एफ0आर0अलचिन।
14. पर्यटन उद्योग मे सार्वजनिक क्षेत्र–योजना (वार्षिक नवम्बर)25 (1–2) 26 जनवरी 2017, 41–44
15. पर्यटन में मौलिक परिवर्तन–एकोनामिक्स टाइम्स मार्च 16–2017,8 : – 6 – 4
16. प्रतियोगिता दर्पण–जून 1998 व नवम्बर 2017
17. सरिता पर्यटन विशेषांक– मई, जून 2017
18. नवभारत टाइम्स, रोजगार समाचार एवं रोजगार एवं निर्माण आदि।